ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउंडेशन

वैदिक ज्ञान मीमांसा: मेधा और संपदा की प्राप्ति

प्रस्तुतकर्ता: आचार्य कपिल | संपर्क सूत्र: 8756390767

१. मूल मंत्र एवं पदच्छेद

इहैवाभि वि तनूभे आर्त्नी इव ज्यया ।
वाचस्पतिर्नि यच्छतु मय्येवास्तु मयि श्रुतम् ॥३॥

इह । एव । अभि । वि । तनु । उभे इति । आर्त्नी हवेत्यार्त्नीऽइव । ज्यया । वाचः । पतिः । नि। यच्छतु । मयि । एव । अस्तु । मयि । श्रुतम् ॥ ३ ॥

२. शब्दार्थ

पद	अर्थ
इह एव	हीं, मुझ (साधक) में ही।
अभि वि तनु	चारों ओर से विस्तृत करें / प्रचुर मात्रा में प्रदान करें।
उभे	दोनों को (ज्ञान-धारण रूपी मेधा और जीवन-निर्वाह रूपी भौतिक संपदा)।
आर्त्नी इव	धनुष के दोनों सिरों के समान।
ज्यया	डोरी या प्रत्यंचा (bowstring) के द्वारा।
वाचः पतिः	वाणी के स्वामी (विधाता / परमेश्वर)।
नि यच्छतु	स्थिर करें / भली-भांति नियमन करें।
मयि एव अस्तु / मयि श्रुतम्	मुझमें ही (स्थायी रूप से) रहे / मेरा सुना हुआ (ग्रहण किया हुआ) ज्ञान।

३. सायणाचार्य भाष्य का सरल अनुवाद

हे वाणी के स्वामी! मुझ साधक में ही आप दोनों प्रकार के फलों—श्रुत ज्ञान को धारण करने वाली मेधा (बुद्धि) और विविध भोगों (जीवन निर्वाह) की हेतुभूत संपदा—को सब ओर से विस्तृत करें। जिस प्रकार धनुष की डोरी (प्रत्यंचा) के द्वारा धनुष के दोनों सिरों को बलपूर्वक खींचा और एक साथ बांधा जाता है, उसी प्रकार यदि ये दोनों फल सहज प्राप्त न भी हों, तो भी आप उन्हें बलपूर्वक मुझमें स्थापित करें। अब प्राप्त फल की स्थिरता की प्रार्थना है: विधाता मुझे दिए गए समस्त फलों को मुझमें इस प्रकार स्थिर (नियमित) करें कि वे मुझे कभी न छोड़ें। जो भी ज्ञान मैंने श्रवण किया है (पढ़ा या सुना है), वह ज्ञान मुझमें ही स्थायी रूप से प्रतिष्ठित रहे।

४. अष्टाध्यायी अनुसार व्याकरणिक विश्लेषण

पाणिनीय व्याकरण के अनुसार इस मंत्र के पदों की व्युत्पत्ति अत्यंत वैज्ञानिक और विशिष्ट है:

- **इहैव (इह):** 'इदमो हः' (पा. ५.३.११) सूत्र से सप्तमी विभक्ति के अर्थ में 'ह' प्रत्यय हुआ है, तत्पश्चात 'इदम इश्' (पा. ५.३.३) से 'इश्' आदेश होकर रूप सिद्ध हुआ है।
- **वि तनु:** 'तनु विस्तारे' धातु से 'तनादिकृञ्भ्य उः' (पा. ३.१.७९) से 'उ' प्रत्यय। फिर 'उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात्' (पा. ६.४.१०६) सूत्र द्वारा 'हि' का लुक् (लोप) हुआ है।
- **उभे:** 'ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्' (पा. १.१.११) से इसकी प्रगृह्य संज्ञा हुई है और 'प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्' (पा. ६.१.१२५) से प्रकृतिभाव हुआ है।
- **आर्त्नी इव:** यहाँ 'इवेन विभक्त्यलोपः पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वं च वक्तव्यम्' (वार्तिक २.१.४) के निर्देश से समास हुआ है।
- **नि यच्छतु:** 'नि' उपसर्ग पूर्वक 'यम्' धातु से शप् विकरण। 'इषुगमियमां छः' (पा. ७.३.७७) सूत्र से 'छ' आदेश। 'तिङ्ङतिङः' (पा. ८.१.२८) सूत्र से सर्वानुदात्तत्व (स्वर प्रक्रिया) संपन्न हुआ है।

५. मंत्र का वैज्ञानिक दृष्टिकोण

यह मंत्र भौतिकी (***Physics***) और संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान (***Cognitive Neuroscience***) के सिद्धांतों का एक सुंदर रूपक प्रस्तुत करता है:

- **स्थितिज ऊर्जा और एकाग्रता:** **"आर्त्नी इव ज्यया"** (धनुष की प्रत्यंचा) का दृष्टांत भौतिकी के ***Elastic Potential Energy*** (प्रत्यास्थ स्थितिज ऊर्जा) का सटीक उदाहरण है। जब डोरी धनुष के दोनों सिरों को खींचकर तनाव (***Tension***) उत्पन्न करती है, तभी उसमें बाण को गतिज ऊर्जा देने की क्षमता आती है। वैज्ञानिक दृष्टि से, मानव मस्तिष्क को भी सूचनाओं को दीर्घकालिक स्मृति (***Long-term memory***) में संचित करने के लिए 'संज्ञानात्मक तनाव' (***Cognitive Focus***) की आवश्यकता होती है।
- **ध्वनि विज्ञान और न्यूरोप्लास्टिसिटी:** **"मयि श्रुतम्"** श्रवण प्रणाली से संबंधित है। जब किसी ध्वन्यात्मक ज्ञान को एकाग्रता (**नि यच्छतु** - Regulation) के साथ ग्रहण किया जाता है, तो मस्तिष्क के हिप्पोकैम्पस क्षेत्र में न्यूरल पाथवे (***Neural pathways***) सुदृढ़ होते हैं। विधाता से ज्ञान को 'स्थिर' करने की प्रार्थना वास्तव में न्यूरोप्लास्टिसिटी के माध्यम से स्मृतियों के समेकन की मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक प्रक्रिया है।

६. दैनिक जीवन में मंत्र का उपयोग

दैनिक जीवन में यह एक अत्यंत प्रभावी 'मेधा-संवर्धन' मंत्र है। विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं, और शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे व्यक्तियों को अध्ययन आरंभ करने से पूर्व या किसी नई विद्या को सीखने से पहले इस मंत्र का मानसिक जप करना चाहिए। यह मंत्र जीवन के दो

सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं—बौद्धिक संपदा (ज्ञान/मेधा) और भौतिक संपदा (संसाधन)—के बीच संतुलन स्थापित करने की प्रेरणा देता है। इसका दैनिक पाठ मन में यह संकल्प दृढ़ करता है कि सीखी गई विद्या केवल परीक्षा या क्षणिक उपयोग तक सीमित न रहे, बल्कि वह हमारे व्यक्तित्व में स्थायी रूप से विलीन होकर जीवन भर हमारा मार्गदर्शन करे।

ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउंडेशन | संस्थापक एवं निदेशक: आचार्य कपिल
संपर्क: 8756390767 | स्थान: बिसवां, सीतापुर, उत्तर प्रदेश